वर्ष 1 अंक 2 [illegible] 2015

ISSN : 2395 – 728X

शिक्षा शोध मंथन

A Half Yearly Bilingual Peer Reviewed Journal of Education

Dwell Deep & Say

Shiksha Shodh Manthan

A Half Yearly Bilingual Peer Reviewed Journal of Education

अध्ययन मंत्र एजूकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित

Scanned by CamScanner

मूल्यों के विकास में योग–शिक्षा की उपादेयता एक अध्ययन 207
डा0 महेश कुमार मुछाल
mkmuchhal@gmail.com

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित और अवंचित वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन 216
डॉ. आशा शर्मा
ashasharma.education@gmail.com

सामाजिक नियन्त्रण एवं शिक्षा 226
सुधीर कुमार एवं डॉ0 स्नेहलता शिवहरे
snehvishesh@gmail.com & sudhirlu@gmail.com

मूल्यपरकशिक्षा के प्रतिशिक्षकों के दृष्टिकोणका अध्ययन 233
सुशील कुमार अवस्थी
skawasthiiiem@gmail.com

मूल्य आधारित शिक्षा, वर्तमान में राष्ट्रीय आवश्यकता 242
डॉ. गिरधारी लाल शर्मा
girdhari1976@gmail.com

स्नातक और नव्य स्नातक छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 249
तनुज कुमार
mrtanuj2387@gmail.com

समावेशी शिक्षा : प्रत्यय, पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक विकास 257
राम रहीस
ramraheesh447@gmail.com

Scanned by CamScanner

मूल्य आधारित शिक्षा, वर्तमान में राष्ट्रीय आवश्यकता

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

सारांश

भारत अपनी प्राचीन गौरवशाली सभ्यता एंव संस्कृति के कारण सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। भारतीय संस्कृति को मानवीय मूल्यों की जननी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। लेकिन विगत कुछ वर्षों से यहां विभिन्न मानवीय मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। इसके लिए पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण, संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन, परिवार तथा विद्यालय का बदलता वातावरण, आधुनिकीकरण की अंधी दौड़, 'स्व–भावना' की बढ़ती प्रवृत्ति आदि कारण उत्तरदायी है। ये गिरते हुए मानवीय मूल्य, मानवता के लिए ही खतरा न बन जाएँ, इसलिए आज आवश्यकता है शिक्षा को मूल्य परक बनाने की। शिक्षा के द्वारा बच्चों में मूल्यों को आत्मसात किया जा सकता है। मूल्यपरक शिक्षा कोई धार्मिक शिक्षा नहीं है। मूल्यपरक शिक्षा से अभिप्रायः उस शिक्षा से है, जिसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है जिससे उनका संतुलित एवं सर्वांगीण विकास हो सके। मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने में विद्यालयी विषय तथा पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएं, परिवार तथा विद्यालय वातावरण एवं विभिन्न संचार साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। यदि हम अपनी संस्कृति व सभ्यता, विलुप्त होती मानवीयता को बचाना चाहते है, तो इस दिशा में सबको मिलकर प्रयास करते होंगे, और यदि हम ऐसा करते है तो निश्चित ही सफल भी होंगे।

भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका समाजीकरण समाज के विश्वासों, आदर्शों, सिद्धान्तों और सामाजिक मानदण्डों से निर्धारित होता है। समाज के नियम, आदर्श अथवा मानदण्ड जब व्यक्ति अन्तःकरण से अथवा विश्वास के रूप में स्वीकार करता है, तो इन्हें मूल्य की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार मूल्य मानव का एक आंतरिक गुण है। मूल्यों का मानव के लिए अत्यधिक महत्व है, क्योंकि वे मानव के चिन्तन, व्यवहार एवं आचरण को प्रभावित एवं निर्धारित करते हैं।

हम यदि अपने प्राचीन इतिहास पर नजर डालें तो पाते है कि हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा शिक्षा प्रणाली इतनी समृद्ध थी कि बचपन से ही व्यक्ति में मूल्यों का विकास स्वतः ही हो जाता था, मूल्य आधारित शिक्षा की पृथक से कोई आवश्यकता नही थी। लेकिन वर्तमान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, शिक्षा प्रणाली की संरचना, औद्योगिक सभ्यता के उदय एवं

Scanned by CamScanner

उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास से मानव के जीवन दर्शन, जीवनशैली एवं दृष्टिकोण में अन्तर हुआ है। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप व्यक्ति में लालच, संकीर्णता, स्वार्थपरकता, संवेदनहीनता एवं विलासिता में वृद्धि हुई है तथा व्यक्ति एवं समाज का नैतिक पतन हुआ है। समाज में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का ह्रास एवं क्षरण हुआ है। आज हम पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति का अन्धानुकरण करते हुए इतने विवेकहीन हो गए है कि यह तक नहीं सोच पा रहे कि आगे आने वाली पीढ़ी तथा राष्ट्र के भविष्य को सांस्कृतिक विनाश की ओर धकेलते जा रहे हैं, जिसके गम्भीर परिणामों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम मानवीय मूल्यों यथा प्रेम, दया, करूणा, सहानुभूति, सहयोग, अहिंसा, परोपकार, गुरु–भक्ति, अतिथि सेवा, राष्ट्रप्रेम आदि का ह्रास होते मूक दर्शक बने देख रहे हैं। हम भौतिक नकल कर 'मूल्यों की कब्र पर विकास की गगनचुम्भी इमारत खड़ी करने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु रेत पर मीनारे खड़ी नहीं रह सकती। अत आज आवश्यकता है – देश के कर्णधारों में मानवीय मूल्यों को विकसित करने की, और इसका एक मात्र साधन – शिक्षा है। हम शिक्षा को ही मूल्य आधारित बनाकर राष्ट्र को वर्तमान मूल्य–संकट की स्थिति से निकाल सकते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य :

- छात्रों में सहयोग, प्रेम एवं करुणा, शांति एवं अहिंसा, साहस, समानता, बंधुत्व, श्रम–गरीमा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि मौलिक गुणों का विकास करना।
- छात्रों को एक उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्रीय लक्ष्यों – समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र का सही ढंगों से बोध कराना।
- देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में उन्हें जागरूक बनाना, साथ ही उन्हें उनमें वांछित सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे वे स्वयं में आस्था रखने में समर्थ हो सके।
- छात्रों में स्वयं व अपने साथियों के प्रति, स्वदेश के प्रति, मानवता के प्रति, सभी धर्मों एवं संस्कृतियों के प्रति, जीवन एवं पर्यावरण के प्रति समुचित दृष्टिकोण विकसित करना।
- छात्रों को स्वयं जो जानने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे वे स्वयं में आस्था रखने ये समर्थ हो सके।

मूल्यपरक शिक्षा के मार्गदर्शक सिद्धान्त :

- मूल्यपरक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा से भिन्न है। अतः इसमें धर्म विशेष पर विशेष बल नहीं दिया जाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

- इसको स्वतंत्र विषय के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान नहीं किया जाना चाहिए बल्कि विभिन्न विषयों में ही मूल्यों को समाहित किया जाना चाहिए।
- संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व मूल्यपरक शिक्षा का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए।
- मूल्यपरक शिक्षा को समाज की आर्थिक सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
- मूल्यपरक शिक्षा के कार्यक्रम की सफलता घर, विद्यालय के आदर्श वातावरण तथा शिक्षक के आधार पर होनी चाहिए।

मूल्यपरक शिक्षा क्यों ?

निःसन्देह वर्तमान में चारों ओर मानवीय मूल्यों में गिरावट नजर आ रही है, जिससे राष्ट्र में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में मानवता के लिए खतरा पैदा हो गया है। मानवीय मूल्यों में गिरावट के प्रमुख कारण निम्न हैं –

1. **पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण :** वर्तमान में चारों और पाश्चात भौतिकवादी संस्कृति का बोलबाला नजर आता है। हम अपने रहन–सहन, खान–पान, भाषा, वेष–भूषा, आचारण, दृष्टिकोण हर बात में पाश्चात्य अंधानुकरण कर रहे है। यह मूल्यों के क्षरण का सर्वप्रमुख करण है। बुजुर्ग माता–पिता को वृद्धाश्रमों में भेजा जा रहा है, देर–रात तक शराब पीकर अर्द्धनग्न शरीर में पार्टी करना फैशन बन गया है। ये कहां जा रहे है हम ? क्या यही हमारी संस्कृति है ?
2. **संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन :** भारत में मूल्य स्थापना में यदि सर्वोच्च योगदान था तो वो था – संयुक्त परिवार प्रणाली का। बच्चों को सहज ही मूल्यों की शिक्षा अपने दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ ताई आदि बड़े लोगों से मिल जाती थी। बच्चे कभी माता–पिता की कमी महसूस ही नहीं करते थे। लेकिन जबसे संयुक्त परिवारों के विघटन से एकल परिवार बनने लगे हैं, मूल्य–ह्रास की समस्या होने लगी है।
3. **वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास :** वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास ने जहां ज्ञान में वृद्धि की है, वही आध्यात्मिकता के विकास में कमी भी की है, हम खुद से ज्यादा मशीनों पर विश्वास करने लगे हैं। जहां देखों मशीनीकरण वढ़ता जा रहा है। विद्यार्थी शिक्षक से ज्यादा इन्टरनेट से सीखने में रूचि लेने लगे है। यह भी मूल्यों में क्षरण का एक प्रमुख कारण है।
4. **मल्टीमिडिया का बढ़ता उपयोग :** आज चारों ओर मल्टी मीडिया का बोलबाला है। छोटे–छोटे बच्चों के पास मल्टीमीडिया मोबाइल फोन होते है। जिनका जाने–अनजाने बच्चे दुरूपयोग करने लग जाते हैं। टी.वी चैनल्स पर सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए

Scanned by CamScanner

अश्लील कार्यक्रमों की बाढ़ सी आ रही है। इन्टरनेट पर विद्यार्थी जाने–अनजाने अश्लील साइट्स का उपयोग कर रहे है, इससे बच्चे उम्र से पहले ही परिपक्व हो रहे है तथा अपराध की ओर मुडते जा रहे हैं।

5. **घर, विद्यालय तथा समाज का परिवर्तित वातावरण :** बच्चों में मूल्य विकास की प्रथम पाठशाला परिवार है, उसके बाद विद्यालय तथा समाज का स्थान आता है। पारिवारिक वातावरण आज पूर्णतः बदल गया है, आध्यात्मिकता में कमी आई है, माता–पिता दोनों नोकरी करते है, घर पर देर से आना, रात को देर तक जागना, सुबह देर तक सोना, बच्चों के लिए समय न देना आदि मूल्यक्षरण के प्रमुख कारण बनते जा रहे है। इसी प्रकार विद्यालय में भी विज्ञान तथा तकनीकी का बोलवाला नजर आता है, ज्ञान वृद्धि पर आवश्यकता से अधिक ध्यान है। नैतिक तथा चारित्रिक विकास हेतु कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इसके कारण भी मूल्य–क्षरण बढ़ता जा रहा है।

6. **आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ :** वर्तमान में आधुनिकता की परिभाषा ही बदल गई है। आधुनिक होने के नाम पर आज जिस तरह के वस्त्र पहनने का प्रचलन हो गया है, अपने आप में शर्मनाक है। उच्च वर्ग के लोग देर रात तक पार्टियों में शराब पीते हैं, जिस तरह के आचरण करते है किसी से छुपा नहीं हैं, उसका असर न केवल उनके अपने बच्चों बल्कि समाज पर भी पड़ता है। मूल्यों के ह्रास में यह भी प्रमुख कारण है।

7. **माता–पिता/अभिभावक तथा शिक्षकों का व्यवहार व आचरण :** बच्चों में मूल्यों के विकास में उनके माता–पिता की अहम् भूमिका होती है। लेकिन आज माता–पिता के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं है। महिलाओं में आज पढ़ाई का अर्थ केवल नौकरी करना मात्र रह गया है, घर में रहना उनकी शान के खिलाफ है, उनके अपने बच्चो पर इसका क्या असर होगा कोई फर्क नहीं पड़ता। जो मूल्य बच्चे को उनसे मिलने चाहिए थे, प्रायः बच्चा उनसे वंचित रह जाता है। इसी प्रकार शिक्षक का अपना व्यवहार तथा आचरण भी मूल्य विकास में महत्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्यवस शिक्षकों का भी इस दिशा में योगदान पर्याप्त नहीं है।

8. **स्व–भावना की बढ़ती प्रवृत्ति :** वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति केवल स्वयं के बारे में सोचता है। वह किसी भी तरह अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है, चाहे उससे दूसरो का कितना भी अहित हो। इस प्रकार की भावना का सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास में प्रमुख योगदान है।

➢ **मूल्यपरक शिक्षा के साधन :** मूल्यों को आत्मसात कराने के विभिन्न साधनों को निम्न पांच वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैं –

1. **विद्यालयी विषयों तथा पाठ्यक्रम द्वारा :** इसके अन्तर्गत हमें पाठ्य विषयों को मूल्योन्मुख बनाना होगा अर्थात पाठ्यपुस्तकें एवं उनमें निहित सामग्री इस प्रकार की हो जिसके माध्यम से विभिन्न नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, संवैधानिक आदि मूल्यों की

Scanned by CamScanner

शिक्षा सहज रूप में दी जा सके। अध्यापन के प्रत्येक विषय चाहे वह भाषा हो, विज्ञान या गणित हो, सामाजिक या पर्यावरण अध्ययन हो, के माध्यम से मूल्य शिक्षा देनी चाहिए। उदाहरण के लिए भाषा शिक्षक कहानी, नाटक, कविता आदि के माध्यम से विभिन्न मूल्यों को बच्चों में विकसित कर सकता है।

2. **पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा :** मूल्यों के आत्मसातीकरण में पाठ्यसहगामी क्रियाओं का विशिष्ट महत्व है। इन क्रियाओं के अन्तर्गत खेल–कूद, एन.सी.सी. स्काऊटिंग, प्रार्थना सभा, समूह–गान, श्रमदान, उत्सव–आयोजन, मोन–बैठक आदि का समावेश होता है। इन क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थियों में विभिन्न नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण, लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रीय तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है।

3. **घर तथा विद्यालयी वातावरण के द्वारा :** मूल्यों के विकास में घर, विद्यालय तथा समाज के वातावरण का विशेष योगदान होता है। घर का वातावरण यदि आध्यात्मिक हो, छोटे–बड़ों का आदर करते हों, अतिथि सत्कार की परम्परा हो, परस्पर सहयोग की भावना हो तो बच्चों में भी इन मूल्यों का विकास स्वतः हो जाता है। इसी प्रकार विद्यालय में प्रार्थना, शिक्षकों का कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता, स्वच्छ व शान्त वातावरण बच्चों में सहज ही मूल्यों के विकास में सहायक होता है।

4. **माता–पिता, तथा शिक्षकों का स्वयं का व्यवहार व आचरण :** बच्चे अधिकांश बाते, बड़ों के अनुकरण से सीखते है। घर पर माता–पिता तथा अन्य बड़े सदस्य एवं विद्यालय में शिक्षकों का व्यवहार व आचरण का मूल्यों के विकास में अहम योगदान है। माता–पिता के आपसी तथा बच्चों के साथ सम्बन्ध, घर पर आने वाले अतिथियों के प्रति उनका व्यवहार का बच्चों में मूल्य विकास में योगदान होता है। इसी प्रकार एक शिक्षक का व्यवहार व आचरण, उनके खाने–पीने, उठने–बैठने, पहनने, सोने आदि प्रत्येक व्यवहार का बच्चों में मूल्य विकास में योगदान होता है। इसी प्रकार एक शिक्षक का व्यवहार व आचरण भी आदर्श होना चाहिए। समय की पाबन्दी, कर्त्तव्यनिष्ठा, निष्पक्ष व्यवहार स्नेही स्वभाव आदि गुणों के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास के महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

5. **संचार साधनों के माध्यम से :** बच्चों से लेकर बड़ों तक बात पहुंचाने का सबसे अच्छा माध्यम संचार साधन है। वर्तमान में टेलीवीजन की पहुंच प्रत्येक घर में है। टी.वी. चैनल्स को केवल पैसा कमाने पर ही ध्यान न देकर समाज सुधार पर भी ध्यान देना चाहिए। ज्ञानवर्धक तथा आध्यात्मिक कार्यक्रमों का प्रसारण करना चाहिए। इस प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम प्रसारित किए जाएं जिससे बच्चों में मूल्यों का विकास हो। टी.वी. कार्यक्रमों तथा फिल्मों में बढ़ती अश्लीलता पर रोक लगनी चाहिए। माता–पिता को भी बच्चों पर ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे कही ऐसे कार्यक्रम या फिल्में तो नहीं देखते जो उनके नैतिक व चारित्रिक विकास में बाधक हों।

Scanned by CamScanner

6. **योग शिक्षा के माध्यम से–** वर्तमान में हम देखते हैं कि युवावर्ग न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी कमजोर हो चला है। यह मूल्यों के क्षरण का सबसे बड़ा कारण है। इसमें सोशियल मीडिया का सबसे बड़ा योगदान है। हमारे मन–मस्तिष्क में कलुषित प्रवृत्तियां घर करती जा रही है, जिसका दुष्परिणाम सामाजिक मूल्यों के ह्रास के रूप में नजर आ रहा है। योग शिक्षा के माध्यम से शरीर के साथ मन की स्वस्थता का विकास किया जा सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा है– मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य संतुलित जीवन, समता का जीवन, सहिष्णुता का जीवन, आवेग, आवेश, नियंत्रण का जीवन, जीने से है। मन को प्रशिक्षित कर उसे शांत करने का सर्वाधिक निर्दोष और महत्त्वपूर्ण उपाय है– ध्यान एवं अनुप्रेक्षा। इसी को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्र सरकार ने विद्यालय स्तर से योग शिक्षा अनिवार्य करने का निर्णय लिया है, जो एक सराहनीय कदम है। आवश्यकता है, इसके सही रूप में क्रियान्वयन की, ताकि इसका सुमुचित लाभ मिल सके।

शैक्षिक निहितार्थ :

1. मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति चिन्तन में वृद्धि होगी, फलस्वरूप वे पाश्चात्य सभ्यता–संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति को त्यागने को प्रेरित होंगे। यह एक ऐसा बदलाव होगा, जो वर्तमान में अत्यंत आवश्यक है।
2. मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में धार्मिक सहिष्णुता की भावना के विकास में सहायता मिलेगी, जो वर्तमान में फैल रहे असहिष्णुता के जहर को रोकने में अत्यंत सहायक होगी।
3. वर्तमान में बढ़ता सोशियल मीडिया का प्रभाव बच्चों के मन–मस्तिष्क पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है य न केवल बच्चे, बल्कि युवा वर्ग भी इनके आदि बढ़ते जा रहे है तथा अपने उद्देश्य से भटक रहे है। इससे बच्चों तथा युवाओं के मस्तिष्क परिवर्तन में मूल्य शिक्षा अत्यंत सहायक हो सकती है।
4. वर्तमान बदलते शैक्षिक–सामाजिक परिदृश्य में गुरू तथा शिष्य एवं बच्चों तथा माता–पिता के मध्य दूरियां बढ़ी हैं, साथ ही एक दूसरे के सम्मान में भी कमीं आई है जो एक चिन्तनीय प्रश्न है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से गुरू–शिष्य सम्बन्धों में मधुरता के साथ ही माता–पिता तथा बच्चों के बीच भी सौहार्द की भावना में वृद्धि की जा सकती है, जो कि स्वस्थ सामाजिक विकास की प्रथम आवश्यकता है।
5. मूल्य शिक्षा, वर्तमान में चरम पर पहुंच रही अनेक समस्याओं जैसे – आंतकवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, लोकतंत्र की गिरती गरिमा, बढ़ता सामाजिक सांस्कृति प्रदूषण, जो कि राष्ट्र के विकास में सबसे बड़े अवरोधक है, के समाधान में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है।

Scanned by CamScanner

निष्कर्ष :

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है। परन्तु आज अनास्था व पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा व मूल्य धूमिल से हो गए है। आज का प्रत्येक भारतीय संक्रांतिकाल से गुजर रहा है अर्थात कभी वह पुरातन मूल्यों की ओर झुकता है तो कभी आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा की ओर। मूल्यों के अभाव में मानवीय सम्पर्कों में सहजता समाप्त हो गई है। कृत्रिमता का साम्राज्य स्थापित हो गया है। सहज जीवन लुप्त हो रहा है और हम बनावटी मुखौटों के सहारे जीने को बाध्य हो रहे है। आज जो खतरा है वह यह है कि मानव जाति समाप्त हो न हो, वरन् मानवीय तत्व आवश्य लुप्त हो जाएगा। अतः हमें इसी शिक्षा के बीच ऐसा प्रकाश जगाना होगा जो मानव मन की गहराइयां छू सकें, उसे समझ सके, उसकी मजबूरियों, सीमाओं आदि को रेखांकित कर सके। इसके लिए हमको शिक्षा को मूल्योंन्मुखी बनाना होगा ताकि हम अपने देश को एक उज्ज्वल भविष्य दे सकें।

सन्दर्भ

टेलर, ऊषा. (2015). *नया शिक्षक* . बीकानेर : राज0 माध्यमिक शिक्षा निदेशालय. 42–54.

नेगी, सुरेन्द्र सिंह. (2000). *नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता.* बीना.: आदित्य पब्लिसर्स.

पाराशर, शैलेन्द्र. (2010). *उच्च शिक्षा में शिक्षकों के बदलते मूल्य.* नई दिल्ली : क्लासीकल पब्लिशिंग कम्पनी.

पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करूणा शंकर. (2006). *मानवाधिकार एवं मूल्य शिक्षण.* : आगरा विनोद पुस्तक मंदिर.

लोढ़ा, महावीर मल. (2007). *नैतिक शिक्षा : विविध आयाम.* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

वर्मा, सुरेन्द्र. (1996). *भारतीय जीवन मूल्य.* वाराणसी : पार्श्वनाथ विद्यापीठ.

समणी, मल्लिप्रज्ञा एवं जोशी, हेमलता. (2009). *शिक्षा दर्शन एवं मूल्य विकास.* लाडनूं : जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय.

त्रिपाठी, नरेशचन्द्र; विहारी, विश्वनाथ. (2006). *शिक्षा के नूतन आयाम.* आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.

Scanned by CamScanner